3. बर्हिदर्शन या निरीक्षण विधि (Extrospection or Observation Method) : 'निरीक्षण' का सामान्य अर्थ है। ध्यानपूर्वक देखना। हम किसी व्यक्ति के व्यवहार, आचरण, क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं आदि को ध्यानपूर्वक देखकर उसकी मानसिक दशा का अनुमान लगा सकते हैं। इस विधि का प्रतिपादन व्यवहारवाद (Behaviourism) नामक मनोवैज्ञानिक सम्प्रदाय के जनक जॉन बी. वॉटसन (John B. Watson) के द्वारा किया गया था। इसमें बाह्यरूप से जो कुछ स्पष्ट दिखाई देता है उसक निरीक्षण किया जाता है और उसी के आधार पर मानसिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

गुण : (a) इस विधि का प्रयोग शिशुओं, बालकों, किशोरों, प्रौढ़ों समूहों आदि सभी के ऊपर किया जा सकता है।

(b) वहिर्दर्शन विधि में अचेतन, अर्द्धचेतन, विकृत तथा विक्षिप्त अवस्थाओं में किए जाने वाले व्यवहारों का अध्ययन किया जा सकता है।

(c) इस विधि में एक साथ अनेक व्यक्ति किसी व्यक्ति के व्यवहार का अवलोकन कर सकते हैं जिससे परिणाम अपेक्षाकृत अधिक वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय और वैध प्राप्त होते हैं।

(d) वहिदर्शन विधि से प्राप्त परिणामों के संख्यात्मक होने के कारण उनका सांख्यिकीय विश्लेषण किया जा सकता है।

4. जीवन इतिहास विधि (Case History Method) : कभी-कभी मनोवैज्ञानिकों को किसी व्यक्ति विशेष अथवा वंश विशेष अथवा वर्ग विशेष की विलक्षणता तथा समस्याओं को जानना होता है।तब मनोवैज्ञानिक जीवन इतिहास विधि का प्रयोग करते हैं। इस पद्धति में व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी की जाती है। शिक्षा मनोवैज्ञानिक अनेक प्रकार के बालकों के सम्पर्क में आता है जैसे - अपराधी, मानसिक रोगी, झगड़ालू, समाज विरोधी कार्य करने वाले तथा समस्याग्रस्त बालक आदि। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार भौतिक, पारिवारिक एवं

सामाजिक वातावरण बालकों में मानसिक असन्तुलन उत्पन्न कर देता है जिसके कारण वह अवांछनीय व्यवहार करने लगता है। बालकों के इस अवांछनीय व्यवहार का कारण जानने के लिए मनोवैज्ञानिक उसके पूर्ण इतिहास के बारे में स्वयं उससे, उसके माता-पिता से, शिक्षकों से, सम्बन्धियों से, पड़ोसियों से मित्रों से पूछ-ताछ करके तस्य एकत्रित करता है। तथ्यों की सहायता से शिक्षक बालकों में अवांछनीय व्यवहार के कारणों की खोज करता है इस प्रकार यह पद्धति विशेष व्यवहार के कारण का निदान करती है।

गुण: (a) मंदबुद्धि, पिछड़े बालक तथा मानसिक विकास- ग्रस्त बालकों के कारणों का अध्ययन करके उनके उपचार इस पद्धति का उपयोग होता है। अतः यह विधि उपचारात्मक शिक्षण के लिए लाभदायक है।

(b) इस विधि में विभिन्न स्रोतों से व्यापक रूप में तथ्य एकत्रित किए जाते हैं। इसलिए प्राप्त निष्कर्ष विश्वसनीय होते हैं।

5. मनोविश्लेषण विधि (Psycho-Analytical Method): इस पद्धति के जन्मदाता वायना (Viana) के विख्यात चिकित्सक सिगमन्ड फ्रायड (Sigmund Freud) थे। उनके अनुसार मन (Mind) के तीन स्तर होते हैं चेतन (Conscious), अर्द्धचेतन (Sub-Conscious) और अचेतन (Unconscious) व्यक्ति पर अचेतन मन का बहुत प्रभाव पड़ता है। इस विधि के द्वारा व्यक्ति के अचेतन मन का अध्ययन किया जाता है और उसकी मानसिक ग्रन्थियों का पता लगाया जाता है। अचेतन मन के अध्ययन से उसकी अतृप्त इच्छाओं की जानकारी प्राप्त की जाती है और इन इच्छाओं का परिष्कार करके उसके व्यवहार को अच्छा बनाने का प्रयास किया जाता है।

गुण : (a) मनोविश्लेषण विधि से व्यक्ति को आन्तरिक स्थिति का वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है।

(b) इस विधि से भावनाग्रंथियों तथा मानसिक विकारों की खोज की जा सकती है।

6. प्रश्नावली विधि (Questionnaire Method) : प्रयोगकर्ता किसी शिक्षा समस्या के बारे में अनेक व्यक्तियों के विचारों को जानना चाहता है। अतः इस पद्धति में अध्ययन करने वाली समस्या से सम्बन्धित कुछ सुलझे एवं छोटे-छोटे प्रश्नों की प्रश्नावली तैयार कर लेते हैं। इस प्रश्नावली को, समस्या से सम्बन्धित व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के पास हल करने के लिए भेज देते हैं। उनसे प्राप्त उत्तरों का वर्गीकरण और अध्ययन करके निष्कर्ष निकाले जाते हैं। जो कि विश्वसनीय माने जा सकते हैं।

गुण : (a) वर्तमान में मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक अध्ययन में इस पद्धति का प्रयोग किया जा रहा है।

(b) बच्चों एवं किशोरों के लिए भी प्रश्नावली विधि उपयोगी है।

(c) इस विधि में समय और धन कम खर्च होता है।